आफरी में मरु प्रसार रोक दिवस पर कार्यक्रम

(17 जून 2015)

मरू क्षेत्र के लोगों की एक विशिष्ट जीवन पद्धति है, जो सदियों से चली आ रही है । यहां के लोग प्राकृतिक संसाधनों का उचित इस्तेमाल कर आने वाले भविष्य के लिए सुरक्षित पर्यावरण बनाने को तत्पर रहे हैं, ये उद्गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर के निदेशक श्री एन.के. वासु, भा.व.से. ने आफरी सभागार में मरू प्रसार रोक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये । श्री वासु ने किसी भी नवीन तकनीक के उपयोग से पूर्व उसके भविष्य में होने वाले परिणामों पर मंथन करने तथा भू-अपरदन रोकने हेतु नवीन कृषि तकनीक अपनाने तथा हर व्यक्ति को मरू क्षेत्र में रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने एवं हरियाली लाने हेतु कार्य करने का आह्वान किया । उन्होंने यह भी बताया कि पारिस्थितिकी के जितने भी घटक हैं, वे आपस में जुड़े हुए हैं कोई भी चीज एकाकीपन (isolation) में नहीं है । उन्होंने कहा कि गाँव का आज भी अपना पारिस्थितिकी तंत्र (ecosystem) है । खाद्य सुरक्षा के मद्देनजर श्री वासु ने बताया कि विभिन्न प्रकार की भूमि का उसकी उपयुक्तता अनुसार उपयोग किया जावे । उन्होंने कृषि योग्य भूमि पर खाद्यान्न उपजाये जाने पर जोर दिया । उन्होंने कहा कि इसी तरह

खाद्यान्न सुरक्षा हेतु पानी के सदुपयोग पर अध्ययन किया जाना चाहिये । मरू प्रसार रोक जैसे दिवस की चर्चा करते हुए उन्होंने बताया कि इस तरह के दिवस आम लोगों में जागरूकता लाकर उनके जीवन स्तर में सुधार लाने के लिये मनाये जाते हैं ।

कार्यक्रम के प्रारम्भ में कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष श्री उमाराम चौधरी, भा.व.से. ने मरू प्रसार रोक दिवस की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए कार्यक्रम की रूपरेखा बतायी । उन्होंने भू-संरक्षण की परम्पराओं का जिक्र करते हुए खाद्यान्न की सुरक्षा हेतु भू-संरक्षण की आवश्यकता प्रतिपादित की ।

तत्पश्चात् संस्थान के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी.सिंह ने राजस्थान, गुजरात एवं दादरा नगर हवेली के सन्दर्भ में भू-अवक्रमण (Land degradation) पर ज्ञानवर्धक प्रस्तुतीकरण दिया । डॉ. सिंह ने विभिन्न आंकड़ों एवं ग्राफिक्स के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के अवक्रमण तथा जलवायु परिवर्तन की चर्चा कर इनके परिणामस्वरूप् पड़ने वाले प्रभाव को कमतर करने के लिए, सुव्यवस्थित (smart) कृषि की आवश्यकता प्रतिपादित की । उन्होंने ग्राफिक्स के माध्यम से यह भी बताया कि किस तरह वनों के घनत्व में समय के साथ परिवर्तन हो रहा है । उन्होंने बताया कि वनों का कम होता घनत्व भूमि के अवक्रमण को बढ़ावा देता है । डॉ. सिंह ने भूमि अवक्रमण के विभिन्न कारणों का जिक्र किया । डॉ.

सिंह ने बताया कि अवक्रमित होती भूमि में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग जितना तेजी से बढ़ रहा है उतनी तेजी से फसलों का उत्पादन नहीं बढ रहा है । उन्होंने भू-अवक्रमण की गति रोकने के लिए वनीकरण की आवश्यकता प्रतिपादित की ।

इसके बाद विश्व मरू प्रसार रोक दिवस 2015 के विषय "सतत खाद्य तंत्र के माध्यम से सभी के लिए खाद्य सुरक्षा की प्राप्ति" (Theme –Attainment of food security for all through sustainable food systems) पर चर्चा की गयी जिसका प्रारम्भ वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. यू.के.तोमर के उद्बोधन से हुआ । डॉ. यू.के. तोमर ने बढ़ती हुई मांग के मद्देनजर संसाधनों पर बढ़ते दबाव का जिक्र करते हुए शिक्षा की आवश्यकता प्रतिपादित की । डॉ. डी.के. मिश्रा ने कार्बन स्थिरीकरण (carbon fixation) की चर्चा करते हुए बताया कि उपलब्ध सिंचाई व्यवस्था आदि के मद्देनजर हमें खाद्यान्न का उत्पादन बढ़ाने पर विचार करना चाहिये । डॉ. तरूण कान्त ने खाद्यान्न के सतत् उत्पादन पर जोर देते हुए नवीनतम तकनीकों के उपयोग का जिक्र किया । श्री आशीष सिन्हा, प्रभारी सूचना प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ ने बढ़ते हुए सीमेंटीकरण (Cementization) और कम होते कृषि क्षेत्र तथा वन क्षेत्र का जिक्र करते हुए इस अनुत्क्रमणीय (irreversible) नुकसान की भरपाई हेतु वनीकरण बढ़ाने पर जोर दिया । श्री अनिल शर्मा, अनुसंधान सहायक-द्वितीय ने खाद्यान्न को संरक्षित रखने की पुरानी भण्डारण पद्धति का जिक्र करते हुए सौर ऊर्जा आदि के इस्तेमाल से इनके परिरक्षण (preservation) की आवश्यकता प्रतिपादित की ताकि खाद्यान्न व्यर्थ नष्ट न हो ।

उप वन संरक्षक जोधपुर श्री आर.के. सिंह ने भी पारम्परिक पद्धतियों के अवक्रमण की चर्चा की । श्री सिंह ने प्राकृतिक खाद के उपयोग को बढ़ाने पर जोर देते हुए जैविक खेती का जिक्र किया । उन्होंने सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा जैसे प्राकृतिक संसाधनों के उपयोग तथा नियन्त्रित चराई, स्टाल फीडिंग इत्यादि के माध्यम से पारम्परिक एवं विस्तृत क्षेत्र में उपलब्ध चारागाह के आदर्श मॉडल विकसित करने का आह्वान किया । श्री सिंह ने समग्र दृष्टिकोण (Holistic approach) पर जोर देते हुए ऐसे कृषि वानिकी मॉडल तैयार करने का आग्रह किया जिसमें उचित वृक्ष प्रजातियों एवं उनकी उपयुक्त संख्या का समावेश हो ।

उप वन संरक्षक वन्य जीव श्री महेन्द्र सिंह राठौड़ ने खजूर जैसे बागवानी के पौधों का उदाहरण देते हुए रोहिडा के ऊतक संवर्धन (Tissue culture propagation) विषय का जिक्र किया । श्री सिंह ने बताया कि रोहिड़ा रेगिस्तान में कृषकों के खेतों में प्राकृतिक रूप से उगता है। उन्होंने भी कृषि वानिकी के मॉडल की आवश्यकता प्रतिपादित की । उन्होंने जन जागरण के माध्यम से सामुदायिक भूमि एवं अन्य बंजर पड़ी जमीन को सुरक्षित एवं संरक्षित कर जैव विविधता के संरक्षण का आह्वान किया ।

समूह समन्वयक (शोध) श्री बी.आर.भादू, भा.व.से. किसानों के लिए चारागाह की महत्ता बताते हुए कहा कि जहाँ एक ओर लोगों की आवश्यकता बढ़ रही है वहीं कृषि सिमटती जा रही है और जमीन भी बंजर हो रही है, जिसके समाधान के लिये हमें वृक्षारोपण करने होंगे ।

कार्यक्रम का संचालन श्रीमती भावना शर्मा, वैज्ञानिक सी ने किया । इस कार्यक्रम के प्रचार प्रसार में श्री एन.के. बोहरा, जन सम्पर्क अधिकारी का विशेष योगदान रहा । कार्यक्रम में कृषि वानिकी प्रभाग के डॉ. बिलास सिंह, अनुसंधान अधिकारी एवं रतनाराम लोहरा, अनुसंधान सहायक प्रथम एवं श्री तेजाराम का सहयोग रहा ।

विश्व मरू प्रसार रोक दिवस पर पौधारोपण कार्यक्रम

विश्व मरू प्रसार रोक दिवस के अवसर पर प्रातः शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी), जोधपुर के मुख्य परिसर में पौधारोपण का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें संस्थान के निदेशक श्री एन.के. वासु के नेतृत्व में अर्जुन, बेल, बहेड़ा एवं महुआ के पौधे रोपे गये । निदेशक महोदय ने सभी अधिकारियों/वैज्ञानिकों एवं कर्मचारियों की उत्साहपूर्वक भागीदारी देखकर प्रसन्नता व्यक्त की तथा समय -समय पर इसी तरह के पौधारोपण, विशेषकर बेल जैसे फलदार वृक्षों के झुंड में वृक्षारोपण (Block plantation) किये जाते रहने का आह्वान किया । वन संरक्षक, जोधुपर श्री दया राम सारण ने भी इस पौधरोपण कार्यक्रम में भाग लिया । पौधारोपण कार्यक्रम के लिए श्री सादुल राम देवड़ा एवं श्री कान सिंह का भी सहयोग रहा ।

मरू प्रसार रोक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम संबन्धित समाचार पत्रों की कतरनें

मरू प्रसार रोक दिवस पर आफरी में कार्यक्रम आज

जोधपुर, 16 जून। मरू प्रसार रोक दिवस 17 जून के अवसर पर शुष्क वन अनुसंधान संस्थान, जोधपुर में कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। सुबह साढ़े नौ बजे पौधारोपण कार्यक्रम- आफरी के मुख्य परिसर में आयोजित किया जाएगा। सुबह 11 बजे आफरी सभागार में कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा जिसमे प्रभागाध्यक्ष, कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग द्वारा कार्यक्रम परिचय, राजस्थान, गुजरात एवं दादरा नगर हवेली के सन्दर्भ में भू- अवक्रमण की स्थिति पर डॉ. जी. सिंह का व्याख्यान एवं मरू प्रसार रोक दिवस 2015 के विषय 'सतत् खाद्य तंत्र के माध्यम से सभी के लिए खाद्य सुरक्षा की प्राप्ति 'पर चर्चा के बाद निदेशक, आफरी द्वारा मरू प्रसार रोक दिवस 2015 पर संभाषण होगा।

हरियाली के लिए कार्य करने का आह्वान

मरू प्रसार रोक कार्यक्रम आयोजित

जोधपुर, 17 जून (कासं)। आफरी निदेशक एनके वासु ने कहा कि मरू क्षेत्र के लोगो की विशिष्ट जीवन पद्धति है। ये प्राकृतिक संसाधनों का उचित इस्तेमाल कर आने वाले भविष्य के लिए सुरक्षित पर्यावरण बनाने को तत्पर रहे हैं।

ये विचार उन्होंने आफरी सभागार में मरू प्रसार रोक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये। उन्होंने किसी भी नवीन तकनीक के उपयोग से पूर्व उसके भविष्य में होने वाले परिणामों पर मंथन करने तथा भू-अपरदन रोकने के लिए नवीन कृषि तकनीक अपनाने तथा रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने एवं हरियाली लाने के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

कार्यक्रम में बीआर भाटू, डा. जी सिंह ने कहा कि भू-अवक्रमण के बढ़ते दबाव से आज विश्व में 9 में से 1 व्यक्ति भूखा रह रहा है जबकि उर्वरकों के अधिकाधिक उपयोग के बावजूद खाद्य उत्पादन आवश्यकता के अनुरूप नहीं बढ़ पाया है। उन्होंने वन क्षेत्रों में परिवर्तन एवं जलवायु परिवर्तन के प्रभावों आदि के बारे में भी बताया। डा. यूके तोमर ने जनसंख्या वृद्धि कम करने एवं अधिकाधिक पौधे लगाने की जरूरत बताई तथा डा. डीके मिश्रा, डा. तरूण कान्त, एके सिन्हा, अनिल शर्मा, आरके सिंह, महेन्द्र सिंह राठौड़, उमाराम चौधरी ने विचार व्यक्त किए। संचालन भावना शर्मा ने किया।

पौधरोपण : इस अवसर पर आफरी परिसर में पौधरोपण भी किया गया। जिसमें आफरी निदेशक एनके वासु, समूह समन्वयक (शोध) बीआर भाटू, वन संरक्षक सारण तथा अधिकारी एवं कर्मचारियों ने पौधरोपण किया।

आफरी में मरू प्रसार रोक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

जोधपुर, 17 जून। मरू क्षेत्र के लोगों की एक विशिष्ट जीवन पद्धति है जो सदियों से चली आ रही है। यहाँ के लोग प्राकृतिक संसाधनों का उचित इस्तेमाल कर आने वाले भविष्य के लिए सुरक्षित पर्यावरण बनाने को तत्पर रहे हैं, ये उद्गार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) निदेशक एन.के. वासु ने आफरी सभागार में मरू प्रसार रोक दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किये।

आईएफएस वासु ने किसी भी नवीन तकनीक के उपयोग से पूर्व उसके भविष्य में होने वाले परिणामों पर मंथन करने तथा भू-अपरदन रोकने हेतु नवीन कृषि तकनीक अपनाने तथा हर व्यक्ति को मरू क्षेत्र में रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने एवं हरियाली लाने हेतु कार्य करने का आह्वान किया। इस अवसर पर आफरी के समूह समन्वयक (शोध) बी.आर. भाटू ने बताया कि पूर्व में देश की 80 प्रतिशत भूमि कृषि कार्यों में थी, जबकि अब 59 प्रतिशत रह गयी है तथा यह चिंता का विषय है। संभव है कि भविष्य में खेती हेतु भूमि मिलना भी मुश्किल हो।

कार्यक्रम में आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने राजस्थान, गुजरात एवं दादरा नगर हवेली के संदर्भ में भू-अवक्रमण पर अपने व्याख्यान में बताया कि भू-अवक्रमण के बढ़ते दबाव से आज विश्व मे 9 में से 1 व्यक्ति भूखा रह रहा है जबकि उर्वरकों के अधिकाधिक उपयोग के बावजूद खाद्य उत्पादन आवश्यकता के अनुरूप नहीं बढ़ पाया है। डॉ. सिंह ने वन क्षेत्रों में परिवर्तन एवं जलवायु परिवर्तन के प्रभावों आदि के बारे में भी बताया। उन्होंने भू-अवक्रमण का मुख्य कारण जलवायु परिवर्तन एवं मानवीय क्रियाकलापों को बताया। इस वर्ष के मुख्य विषय सतत खाद्य तंत्र के माध्यम से सभी के लिए खाद्य सुरक्षा की प्राप्ति पर चर्चा में आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. यू.के. तोमर ने जनसंख्या वृद्धि कम करने एवं अधिकाधिक पौधे लगाने की जरूरत बताई जबकि डॉ. डी.के. मिश्रा ने बताया कि उत्पादकता की एक सीमा होती है अतः अनुवांशिकी सुधार एवं नवीन तकनीकी का प्रयोग करना होगा। परन्तु इस कार्य को पूर्ण करने में लंबा समय लग सकता है। डॉ. तरूण कान्त ने 2050 तक उत्पादकता दुगुनी करने की जरूरत बताई जिससे बढ़ती जनसंख्या की मांग पूरी हो सकते। ए.के. सिन्हा ने शिक्षा को बढ़ावा देने, जागरूकता पैदा करने एवं कृषिगत जमीन का व्यवसायीकरण रोकने की वकालत की। अनिल शर्मा ने सोलर ऊर्जा के प्रयोग पर जोर दिया।

कार्यक्रम में मण्डल वन अधिकारी आर.के. सिंह ने प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुन्ध उपयोग को रोकने, गोचर भूमि में घास उत्पादन हेतु मॉडल स्वीकृत करने एवं जैव कृषि को अपनाने पर जोर दिया। मण्डल वन अधिकारी (वन्यजीव) महेन्द्र सिंह राठौड़ ने मातृवन पार्क में डेट पाम लगाने एवं रोहिड़ा के टिशू कल्चर द्वारा उत्तम पौधे तैयार करने एवं लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने पर जोर दिया। आफरी के कृषि वानिकी एवं विस्तार प्रभाग के प्रभागाध्यक्ष उमाराम चौधरी ने मरू प्रसार रोक दिवस की महत्ता एवं इस वर्ष के थीम पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन भावना शर्मा ने किया। कार्यक्रम में रतना राम लोहरा एवं सादुल राम देवड़ा ने सहयोग दिया। इस अवसर पर आफरी परिसर में पौधरोपण भी किया गया। जिसमें आफरी निदेशक एन.के. वासु, समूह समन्वयक (शोध) बी.आर. भाटू, वन विभाग के वन संरक्षक सारण तथा आफरी के अधिकारी एवं कर्मचारियों ने पौधरोपण किया।

THURSDAY, 18/06/2015

कृषि तकनीकी से रेगिस्तान को बढ़ने से रोकें : वासु

आफरी सभागार में मरू प्रसार रोक दिवस पर विशेषज्ञों ने प्रकट किए विचार

वक्ताओं ने कहा कि रेगिस्तान ऐसे ही बढ़ता रहा तो भविष्य में खेती के लिए भूमि मिलना ही मुश्किल हो जाएगा।

जोधपुर. जीवन जीने में मरू क्षेत्र के लोगों की एक विशिष्ट जीवन पद्धति है, जो सदियों से चली आ रही है। यहां के लोग प्राकृतिक संसाधनों का उचित इस्तेमाल कर आने वाले भविष्य के लिए सुरक्षित पर्यावरण बनाने को तत्पर रहे हैं ताकि आने वाली पीढ़ियों को भी पर्यावरण का लाभ मिल सके। ये विचार शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (आफरी) निदेशक एनके वासु ने आफरी सभागार में मरू प्रसार रोक दिवस पर बुधवार को आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए।

वासु ने कहा कि अब समय टेक्नोलॉजी का है। ऐसे में वैज्ञानिक किसी भी नवीन तकनीक के उपयोग से पूर्व उसके भविष्य में होने वाले परिणामों पर मंथन करने तथा भू-अपरदन रोकने के लिए नवीन कृषि तकनीक अपनाने एवं हर व्यक्ति को मरू क्षेत्र रेगिस्तान को बढ़ने से रोकने एवं हरियाली लाने के लिए कार्य करने का आह्वान किया।

इस अवसर पर आफरी के समूह समन्वयक (शोध) बीआर भाटू ने बताया कि पूर्व में देश की 81 प्रतिशत भूमि कृषि कार्यों में थी जबकि अब 59 प्रतिशत रह गई है। यह चिंता का विषय है। आफरी के वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. जी. सिंह ने राजस्थान, गुजरात एवं दादर नगर हवेली के संदर्भ में भू-अवक्रमण पर व्याख्यान में बताया कि भू-अवक्रमण के बढ़ते दबाव से आज विश्व में 9 में से एक व्यक्ति भूखा रह रहा है जबकि उर्वरकों के अधिकाधिक उपयोग के बावजूद खाद्य उत्पादन आवश्यकता के अनुरूप नहीं बढ़ पाया है। डा. यूके तोमर ने जनसंख्या वृद्धि कम करने एवं अधिकाधिक पौधे लगाने की जरूरत बताई। डॉ. डीके मिश्रा ने बताया कि उत्पादकता की एक सीमा होती है अतः अनुवांशिकी सुधार एवं नवीन तकनीकी का प्रयोग करना होगा। परन्तु इस कार्य को पूर्ण करने में लंबा समय लग सकता है। डॉ. तरुणकांत ने 2050 तक उत्पादकता दुगुनी करने की जरूरत बताई जिससे बढ़ती जनसंख्या की मांग पूरी हो सकती। एके सिन्हा ने शिक्षा को बढ़ावा देने, जागरूकता पैदा करने एवं कृषित जमीन का व्यवसायीकरण रोकने की वकालत की। अनिल शर्मा ने सोलर ऊर्जा के प्रयोग पर जोर दिया। आरके सिंह ने प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध उपयोग को रोकने, गोचर भूमि में घास उत्पादन के लिए मॉडल स्वीकृत करने एवं जैव कृषि को अपनाने पर जोर दिया।

डीएफओ महेंद्र सिंह राठौड़ ने मचिया पार्क में डेजर्ट पार्क लगाने एवं रोहिड़ा के टिश्यू कल्चर द्वारा उत्तम पौधे तैयार करने एवं लोगों में जागरूकता उत्पन्न करने पर जोर दिया। उमाराम चौधरी ने मरू प्रसार रोक दिवस की महत्ता एवं इस वर्ष के थीम पर प्रकाश डाला। संचालन भावना शर्मा ने किया।

जनगण जोधपुर, गुरुवार 18 जून 2015 3

आफरी में मरू प्रसार रोक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

जोधपुर, गुरुवार, 18 जून, 2015 3

आफरी में मरू प्रसार रोक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

आफरी में मरू प्रसार रोक दिवस मनाया

सांध्य बीकानेर टाइम्स 18-6-2015 फोन: 0291-2515810, 921

आफरी में मरू प्रसार रोक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

सुरक्षित भविष्य के लिए प्राकृतिक संसाधनों का हो उचित इस्तेमाल

देश में कृषि भूमि में 21 प्रतिशत की कमी आयी